International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 31-33

संस्कृत काव्यो मे रामकथा

डॉ0 सीमा सिंह

असि0 प्रो0, एम0ए0(संस्कृत), नेट, पी0एच0डी0(संस्कृत) प्रभाकर, शिक्षा विशारद श्रीरैनाथ ब्रह्मदेव पी0जी0 कालेज, सलेमपुर, देवरिया, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

संस्कृत महाकवियो की दीर्घ्र परम्परा में शायद ही कोई कवि ऐसा हुआ हो जिसने अपनी कृतियो के लिये रामायण के कतिपय प्रसंगो को उपजीव्य के रूप में ग्रहण न किया हो। रामायण उपजीव्य काव्य के रूप मे अनेक कवियो का आश्रय बना। मानव मूल्यों के अंकन मे काव्य के सूचारू आदर्श के चित्रण मे, जीवन को उदात्त बनाने की कला में तथा सत्यम शिवम सुन्दरम के मधुमय सामंजस्य में वाल्मीकि की वाणी विश्व के समक्ष एक अनुपम आदर्श प्रस्तुत कर पाठको के हृदय को सदा आनन्दित करती रहेगी। महर्शि वाल्मीकि साहित्य जगत के ही आदि कवि नही, प्रत्युत भारतीय संस्कृति के संस्कारक मनीशी भी है। रामायण उपजीव्यकाव्य के रूप मे अनेक कवियो का आश्रय बना काव्य तथा नाटको को विशय देने के लिये रामायण ऐ अक्षुण्ण स्रोत है। संस्कृत कवियों नें रामायण की मूल कथा मे कूछ परिर्वतन करते हुये, कुछ मौलिकताओ को जोड़ते हुये रामकथा को एक नया रूप देते हुये पाठको के समक्ष प्रस्तुत किया है। कवियो ने अपने–अपने काव्यो मे रामायण के मूल कथा मे कहॉ परिर्वतन किया है, मौलिकताओं को जोड़ा है और अत्यधिक चमत्कारिक रूप देने का जो प्रयास किया है यही शोध पत्र का विषय है। शोधपत्र मे कमवार इनका वर्णन किया जायेगा।

मूल शब्द: अग्रज, अहिल्या, पुत्रेष्टियज्ञ, धनुर्भंग, काकवृतान्त, मायाशीर्ष, अश्वमेध यज्ञ, हुतोच्छिष्ट, जया–विजया।

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य की पृष्ठभूमि मे वह दिन चिरस्मरणीय रहेगा जब तमसा नदी के तट पर आदि कवि वाल्मीकि के कण्ठ से यह श्लोक करूणा की गंगा के प्रवाह के रूप मे निःसृत हुआ–

'' मा निशाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाष्वतीः समा।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम।।

रामायण की रचना इसी श्लोक का फल है कविता–कल्पद्रुम के कमनीय कोकिल रूप वाल्मीकि की कूक केवल भारतीयों को ही अपने पुण्य –सलिला में अवगाहन नही करीाती, बल्कि विदेशो के भी सहस्रो विद्ववान एवं पाठक आज भी इस पुण्यकृति का गुणगान करते नही थकते, रामायण समस्त काव्यों का बीज है–काव्य बीजम सनातनम (वृहद्धर्मपुराण 1/30/55) वैदिक वौद्व तथा जैन धर्मो में राम समान रूप से मर्यादा पुरूशोत्तम माने जाते है। रामायण पर अगणित प्रचीन टीकाए है। यी सात काण्डों मे विभक्त है। इसकी मूल कथा पुत्रेष्टियज्ञ से प्रारम्भ होकर राम के विष्णु स्वरूप की प्राप्ति पर समाप्त होती है। बीच की कथाओं मे रामजन्म, रामवनगमन,धनुर्भ।ग, सीताविवाह, सीताहरण, रावणवध, राम का अयोध्या आगमन इत्यादि मुख्य है।

रामकथा सम्बन्धी प्रचीन महाकाव्यों मे कथानक की दृष्टि से कोई महत्वपूर्ण परिर्वतन नही मिलता है। उनका एक ही वैशिष्ट्य है– श्रृंगार को अत्यधिक महत्व देना। पहले यह श्रृंगारिक वर्णन राक्षसो के विषय मे किया गया है, लेकिन आगे चलकर राम सीता के श्रृंगार का अतिरंजित चित्रण किया गया है।

कलिदास कृत रघुवंश

रघुवंश के छह सर्गो (सर्ग 10–15) में सम्पूर्ण रामचरित का वर्णन किया गया है इसकी निम्नलिखित विशेषताए है– वाल्मीकि की सूची के अनुसार इक्ष्वाकूवंशावली मे 32 वॉ नाम दिलीप का है, 26 वॉ रघु, 38 वॉ अज तथा 39 वॉ दशरथ[1] । रघुवंश के अनुसार दिलीप रघु अज और दशरथ मे कमश पिता–पुत्र का सम्बन्ध है। अधिकांश परवर्ती रचनाओं मे कालिदास की वंशावली ही प्रमाणिक मानी गयी है जैसे–प्रतिमा नाटक (अंक–2) अग्निपुराण (अध्याय–5) लिंग पुराण (1–61) ब्रहमपुराण (8,85–86) भविष्यपुराण (प्रतिसर्ग पर्व, प्रथम खण्ड़ अध्याय–2,3–6) उदारराघव आदि। भरत लक्ष्मण के अग्रज है। इसलिये युद्व के अनन्तर लक्ष्मण ही भरत को प्रणाम करते है[2]। अहल्या शापवंश शिला बन गयी थी[3]। पुत्रेष्टि यज्ञ का वर्णन किया गया है[4]। सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता की ओर निर्देश नही किया गया है। रामजन्म का अत्यन्त

काव्यमय वर्णन किया गया है[5]। धनुर्भंग के अवसर पर अन्य राजाओं की उपस्थिति का उल्लेख नही है। दशरथ ने विवाह के अनन्तर मुनि पुत्र को मारा था उन्हें उस समय तक पुत्र प्राप्ति नही हो सकी थी इसलिये उन्होंनें मुनि से कहॉ कि मै आपका शाप वरदान ही मानता हूँ[6]। काकवृतान्त का वर्णन भरत के प्रस्थान के अनन्तर है[7]। खर सेना में जितने राक्षस थे राम ने उतने रूप धारण कर लिये[8]। राम के मायाशीर्ष के प्रसंग मे त्रिजटा ही सरमा का स्थान लेती है। शम्बूक वध के द्वारा ही ब्राहमण पुत्र पुनः जीवन प्राप्त करता है। स्वर्णमयी सीता का उल्लेख है[9]। रावण ने शिव को अपने नौ सिर समर्पित किये थे किन्तु वरदान ब्रहमा ने दिया था[10]। सीता परित्याग का कारण लोकापवाद बताया गया है। कुश ने अयोध्या का जीर्णोद्वार किया था[11]। चारो भाई एक–एक चतुर्थांश से जन्म लेते है[12]।

रावणवह अथवा सेतुबन्ध

इसके 15 सर्गो मे रामायण की युद्व काण्ड की कथावस्तु का निबन्धन है इसमे समुन्द्र बन्धन के वर्णन मे मछलियों के द्वारा सेतु को नष्ट करने का उल्लेख है[13]। राम के माया शीर्ष के प्रसंग मे त्रिजटा ही सरमा का स्थान लेती है [14]। विभिशण राम को समझाते है कि पाष के वाण वास्तव में सर्प ही है, तब राम गरूड़ को बुलाते है[15]। राक्षस राक्षसियों का सम्भोग श्रृगार वर्णित है[16]।

भट्टि काव्य

इसमे रामायण के प्रथम छः काण्डो की कथावस्तु का निबन्धन है पुत्रेष्टि

यज्ञ का वर्णन है[17] रानियॉ यज्ञ के अनन्तर हुतोच्छिष्ट का कुछ अंश खाती है[18]। विश्वामित्र को राम ने जया विजया नामक यंत्र प्रदान किये[19]। केवल राम तथा सीता के ही परिणस का उल्लेख है[20]। कैकेयी, राम, लक्ष्मण तथा सीता का वनवास मॉगती है[21]।लक्ष्मण शूर्पणखा की नाक मात्र काटतें है[22]। राम तथा जक्ष्मण दोनो मिलकर राक्षसो का सामना करते है[23]। सीता हरण के पश्चात ही जटाउ का उल्लेख है[24]। सबरी राम का आदरपूर्वक सत्कार करके उनकी वन्दना करती है तथा आश्वस्त कर अर्न्तध्यान हो जाती है[25]। राम की बलपरीक्षा मे केवल वृक्षो के भेदन का ही वर्णन है। रामवाण के कारण करोडो मछलियॉ मर जाती है समुद्र के विनय करने पर राम फिर उन्हें जिवित करते है [26]।

जनकीहरण

इसकी कथावस्तु रामायण के प्रथम छः काण्डो पर निर्भर है इसकी मुख्य कथा है –अहिल्या का उल्लेख, पुत्रेष्टि यज्ञ का वर्णन विवाह से पूर्व सीता के पूर्वानूराग का वर्णन सेतु पर मछलियों का आक्रमण और रावण की अग्निपूजा।

अभिनन्दकृत रामचरित

इसकी मूख्य कथा है– दशरथ ने कौशल्या तथा कैकेयी को पायस का आधा–आधा भाग दे द`दिया और दोनो ने सुतित्रा को अपने पायस का कुछ अंश दिया[27]। राम हनुमान को मुद्रिका के अतिरिक्त सीता का नुपुर देते है उनको अपनी वंशावली भी बताते है तथा सीता के रूप और गुण का वर्णन करते है [28]। सीता रावण को शाप देती है कि तुम सपरिवार मर जाओगे और लंका जला दी जायेगी[29]।

क्षेमेन्द्रकृत दशावतारचरित

इसमे सीता के जन्म के एक सर्वथा भिन्न कथा वर्णित है। रामायण की भूमिजा सीता की कथा का निबन्धन तो है ही, सीता और लक्ष्मी का अभेद भी वर्णित है। रावण एक विशिष्ट स्थान पर बार–बार आता है। आरम्भ मे वह वहॉ एक पर्वत देखता है तत्पश्चात नगर देखता है, फिर वन देखता है, तदनन्तर एक विशाल गढढा देखता है। अन्त मे एक कमलयुक्त सरोवर देखता है। वहॉ एक लिंग की स्थापना कर सरोवर के कमलो से शिव की पूजा करता है। एक कनक पद्म पर वह एक कन्या देखता है जो लक्ष्मी ही है वह उसे पुत्री रूप मे स्वीकार कर लंका ले जाता है, नारद मन्दोदरी के यहॉ पहुँचते है और उसके अंक मे कन्या को देखकर कहते है कि यह कन्या कालान्तर मे रावण की अभिलाशा भूमि बनेगी तब मन्दोदरी उसे स्वर्ण पेटिका मेब न्द कर सुदूर प्रान्त मे गाड़ आने का आदेश देती है[30]।

साकल्यमल्लविरचित उदारराघव

इसमे भी पाशाणभूता अहिल्या का उल्लेख है भरत शत्रुघ्न को चक्र–शंख का अवतार माना गया है दशरथ अपनी रानियो को मिथिला ले आते है अन्धमुनि ब्राहमण नही है। सीता कहती है मैने जितनी रामकथा सुनी है उन सब मे सीता राम के साथ वन जाती है दशरथ लक्ष्मण से अनुरोध करते है कि वे राम को बलपूर्वक राजा बनाये[31]।

चक्रकविकृत जानकी परिणय

इसमे दशरथ यज्ञ से लेकर परशुराम तेजोभंग तक की घटनाओं का आठ सर्गो मे निबन्धन है।

अद्वैतविरचित रामलिंगामृत

इसकी मुख्य कथा मे राम अहिल्या को शाप से मुक्त करते है। राम तथा शिव के अभेद का वर्णन है। राम जन्म से पूर्व ही स्वपन मे अपनी माता कौशल्या को विष्णुरूप मे दिखायी पडतें है, राम के बाललीला के अनन्तर उनकी वनक्रीडा का भी उल्लेख है विभीशण प्रहलाद के अवतार है, युद्व के पूर्व राम ने अपना शिवरूप प्रकट किया था[32]।
अद्वैतकृत राघवोल्लास– इस महाकाव्य का वैशिष्टय है कवि की सुकुमार राम भकि। कथानक रामजन्म से प्रारम्भ होकर विवाह के अनन्तर अधेध्या मे प्रत्यागमन पर समाप्त होता है।

मोहनस्वामीकृत रामरहस्य

इसकी मृख्य कथा मे– विष्णु स्वयं अग्नि से प्रकट होकर पायस प्रदान करते है। भरत तथा शत्रुघ्न शंख तथा चक्र के अवतार है, सीता स्वयंवर मे ही रावण दूत के आगमन तथा उसी अवसर पर राम द्वारा धनुभंग का वर्णन मिलता है। नारद राज्य अस्वीकृत करने के लिये राम से अनुरोध करते है तथा उनको अवतार के उदेश्य का स्मरण दिलाते है[33]।

महाकवि त्रिविक्रमकृत रामर्कीतिकुमुदमाला

रामकथा पर आधारित यह एक खण्ड़ काव्य है।

डा0 भाष्कराचार्य त्रिपाठीकृत लघुरघु काव्यम

यह खण्ड़ काव्य 20वीं शदी के उत्तरार्ध का है इस खण्ड़ काव्य के माध्यम से त्रिपाठी जी ने लघ्वाक्षरी काव्य प्रणयन का बीजारोपण किया है। इसमे सम्पूर्ण रामकथा संक्षेप मे मात्र लघुवर्णघटित छन्दो मे उपनिबद्व है।
साकेतसौविरम्– यह महाकाव्य भी डा0 भाष्कराचार्य प्रणीत बीसवीं शताब्दी का है इसमे आठ सर्ग है श्री रामजन्म से लेकर लव–कुश की कथा पर्यन्त सम्पूर्ण रामकथा वड़ी ही मनोरम शैली मे उपनिवद्व है। इनका एक अन्य
नाटक है स्नेहसौवीरम जो पॉच अंको मे है इसे भी कवि ने नाटयशास्त्रीय नियमो का पालन करते हुये अत्यन्त वैदग्ध्य के साथ रामकथा को पिरोया है।

जानकीजीवनम्

इसके प्रणेता डा0 राजेन्द्र मिश्र देश के उन युवा साहित्यकारो मे है जिन्हें जन–जन का आर्शिवाद, मान तथा यश प्राप्त हुआ है इस महाकाव्य मे 21 सर्ग है। इसमे वैदेही जन्म से लेकर उनके वधू बनकर अयोध्या मे राजभवन मे आने तक की कथा वर्णित है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त रामकाव्यो मे वर्णित कथाओं के आधार पर यह देखने को मिलता है कि मूलतः सभी कवियो ने वाल्मीकि रामायण को ही उपजीव्य बना कर, कुछ परिर्वतनो के साथ, कुछ मौलिकताओ को नूतनता देते हुये वड़े ही सुन्दर रूप मे अपने–अपने काव्यो का विषय बनाया है जो जनमानस को सर्वदा आप्यायित करता रहेगा।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1– वा0रा0 बालकाण्ड़ सर्ग 70
2–रघुवंश 13/73
3–वही 11/34
4–वही दशम सर्ग
5– वही
6–वही 9/80
7–वही सर्ग 12
8–वही सर्ग 12/45
9–वही 12/74
10–14/87
11–वही सर्ग 10

12—वही 16 / 38
13—वही दशम सर्ग
14— सेतुबन्धु 7 / 8
15—वही सर्ग 11
16 वही 13 / 55
17—वही सर्ग 10
18—भट्टि काव्य सर्ग 1
19—वही सर्ग 1
20— वही 2 / 21
21— वही 2 / 43
22—वही 3 / 9
24— वही 4 /
25—वही सर्ग 5
26—वही 6 / 59—71
27—वही सर्ग 15
28—रामचरित 8 / 62
29—वही सर्ग 8
30— वही 19 / 19
31— उदारराघव 2 / 29, 2—30, 8—26, 1—85, 5—48
32—रामलिंगामृत सर्ग 6, 19, 2,1 / 30, सर्ग 9,10
33—रामरहस्य 2,142,सर्ग3, 4 / 58, सर्ग 11